एक प्यारा नाम

अमित और जयश्री

अमित और जयश्री ने लगभग दो दशकों तक जन-आन्दोलन से जुड़े रहने के अनुभव से यह समझा कि संघर्ष और रचनात्मक प्रयासों को साथ-साथ चलना चाहिए। वे गैर-एनजीओ ढाँचे में काम करने के पक्षधर थे और जन भागीदारी पर आधारित एक वैकल्पिक मॉडल विकसित करना चाहते थे। इसी प्रयास के तहत सन् 1998 में आदिवासी मुक्ति संगठन की मदद से *आधारशिला शिक्षण केन्द्र* की स्थापना की गई। यह केन्द्र मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली के विकल्प के रूप में स्थापित किया गया, जो केवल तथ्य और जानकारी देने तक सीमित थी; जबकि आधारशिला का उद्देश्य बच्चों को जीवन से जोड़ते हुए रचनात्मक और लोकतांत्रिक ढंग से शिक्षा देना था। यह शिक्षण केन्द्र आदिवासी समाज के परिवेश और स्थानीय भाषा को ध्यान में रखते हुए विकसित पाठ्यचर्या पर आधारित था, जिसमें बच्चों और शिक्षकों के जीवन के अनुभव के साथ-साथ जयश्री और अमित के भील-भीलाला आदिवासियों के बीच पन्द्रह वर्षों के जीवन और संघर्षों से प्राप्त अनुभवों का योगदान शामिल था। आधारशिला किसी भी संस्थागत फंडिंग के बिना, समाज, संगठन और मित्रों के सहयोग से बाईस साल तक चला – जो इसकी एक महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक उपलब्धि रही।

आज भी, जब प्राथमिक शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना और गणित की मूल अवधारणाएँ समझाना है, तब आधारशिला इस बात का उदाहरण प्रस्तुत करता है कि एक आदिवासी आवासीय विद्यालय कैसे बच्चों को जीवन से जोड़कर उच्च स्तरीय शिक्षा दे सकता है।

संदर्भ के अगले कुछ अंकों में हम *आधारशिला शिक्षण केन्द्र* के सफर के बारे में लेख प्रकाशित करेंगे। इस अंक में पढ़िए इस शृंखला का पहला लेख।

आधारशिला लर्निंग सेंटर मध्य-प्रदेश के सेंधवा से 7 किलोमीटर की दूरी पर बसे साकड़ गाँव में स्थित है। इसकी शुरुआत सन् 1998 में हुई।

मुख्य धारा की शिक्षा में आदिवासियों की भाषा, जीवन शैली, संस्कृति और विविध सरोकारों की अनदेखी होती है। इसलिए सोचा, एक ऐसी शिक्षा पद्धति हो जिसमें आदिवासी बच्चे खुद को सहज महसूस करें। उनकी संस्कृति और इतिहास, उनकी पहचान और आत्मसम्मान का बोध बन सके।

आधारशिला लर्निंग सेंटर एक रिहाइशी स्कूल रहा। इसमें बच्चे और शिक्षक एक ही परिसर में रहते थे। आधारशिला में पारम्परिक तरीकों के साथ-साथ प्रोजेक्ट आधारित पढ़ाई भी करवाई जाती थी। खेतों में काम करना, पेड़-पौधों की परवरिश करना, लर्निंग सेंटर की साफ-सफाई, छात्रावास, भोजनालय की व्यवस्थाएँ सम्भालना आदि।

इस स्कूल में सिर्फ किताबी ज्ञान की जगह हाथों से काम करने और आसपास के परिवेश और समाज से सीखने को तरजीह दी जाती थी। मुख्यधारा की पाठ्यपुस्तकों को सीधे पढ़ाने की बजाय आदिवासी समुदाय के सहयोग से उनके पारम्परिक ज्ञान, उनके इतिहास, उनके खेत-खलिहान, वहाँ की वनस्पति, जीवों और जीवन के संघर्ष की सामग्री से पाठ्यक्रम बनाने की कोशिश की गई।

पाठ्यक्रम की सामग्री स्थानीय

भाषा बारेली में बनाई गई। बारेली में बनी सामग्री का उपयोग शुरुआती कक्षाओं में किया जाता था। इसके बाद घर की भाषा के साथ हिन्दी और इंग्लिश भी जुड़ जाते थे। इस लेख में हम आधारशिला में बच्चों को पढ़ना-लिखना किस तरह सिखाया जाता था, इसके बारे में बात कर रहे हैं।

बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाने के बहुत सारे तरीके सुझाए जाते हैं। आधारशिला में, हमने भी तरह-तरह से बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के प्रयोग किए। हमारा अनुभव है कि प्रायः सभी तरीकों से बच्चे सीख ही जाते हैं। हमारा यह भी मानना है कि इन तरीकों के अलावा बच्चों का सीखना और भी कई बातों पर निर्भर करता है जैसे कि बच्चे स्कूल या कक्षा में कितने सहज हो पाए हैं, उनकी मानसिक हालत और सीखने का निश्चय, स्कूल का माहौल, कुपोषण एवं स्वास्थ्य आदि।

शुरुआती साल में हमारे पास 32 बच्चे आए थे। इनमें से सबसे छोटा छः-साढ़े छः साल का था और बड़े बच्चे दस-ग्यारह साल के होंगे। हमने यह तय किया कि बच्चों को लिखना सिखाने की शुरुआत बच्चों द्वारा खुद के नाम लिखने से की जाए। एक बार बच्चे अपना नाम लिखना सीख जाएँ, उसके बाद वर्ण या अक्षर की पहचान, अक्षरों की ध्वनियाँ आदि की ओर आसानी-से बढ़ सकते हैं।

पहला दिन

सबसे पहले हमने बच्चों को उनका अपना नाम लिखने के लिए प्रेरित किया। सबकी कॉपियों में उनके नाम लिखकर दे दिए और उनसे एक पाण्टा (पेज) भर के नकल करने के लिए कहा। उन्हें बताया गया कि एक घण्टे में ही आप अपना नाम लिखना सीख जाओगे जो अब तक नहीं सीखे हो। बच्चे बहुत ही फुर्ती से अपने नाम की नकल करने में लग गए। कुछ बच्चे पहली बार ही पेंसिल पकड़ रहे थे। थोड़ी ही देर में बच्चे पाण्टा भर-भर कर दिखाने के लिए लाने लगे। सबको जल्दी होती अपनी उपलब्धि दिखाने की। एक-दूसरे की कॉपियाँ भी देख रहे थे। एक-दो जिन्हें पता चल गया कि वे नहीं लिख पा रहे, थोड़ा शर्माते हुए खड़े थे और कुछ सिर झुकाए बैठे हुए थे। वे शायद बिलकुल भी नहीं लिख पाए थे।

सबकी कॉपियों में सुधार करते-करते और नए पाण्टे पर फिर से उनका नाम लिखकर देने में काफी समय निकल गया और दिमाग भी पक गया था। बच्चे भी जैसे ही देखते हैं कि सब इधर-उधर जा रहे हैं, उठ रहे हैं, तो कुछ तो उनमें होते ही हैं जो अति-उत्तेजित होकर भाग-दौड़, दूसरों को तंग करने या मस्ती करने में लग जाते हैं। कक्षा में जब ऐसा माहौल बनने लगे तो समझ लेना चाहिए कि अब गतिविधियों को बन्द करने का समय आ गया है। कल

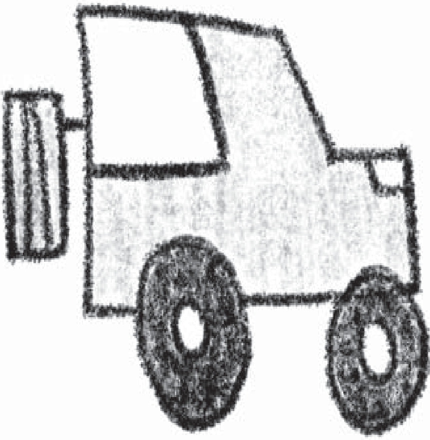

सबको अपना-अपना नाम लिखना सीखकर आना है, यह बोलकर हमने भी बच्चों के झुण्ड से बाहर निकलकर राहत की साँस ली।

नाम लिखने के साथ ही, एक और गतिविधि जो पहले दिन से ही शुरू कर दी थी, वो थी आड़ी-खड़ी और तिरछी रेखाएँ बनाना, गोले और डिब्बे बनाना और बहुत-सी ड्रॉइंग बनाना। यह जाना-माना नुस्खा है अँगुलियों की माँसपेशियों को मज़बूत करने का और उन्हें चलाने का। बच्चे चित्र तो बहुत चाव से बनाते थे। हमें आज भी याद है कि अधिकतर बच्चे जीप बनाते थे। शायद इसलिए क्योंकि स्कूल आने के लिए जीप में पहली बार बैठकर आते थे।

आज की सबसे सुखद बात यह थी कि अपना नाम लिखकर दिखाने के लिए बच्चे काफी उत्सुक थे। बार-बार दौड़कर आ रहे थे। कुछ कर लेने की खुशी होगी शायद। सब जोश से भरे थे।

दूसरा दिन

अगले दिन बच्चे जो काम करके लाए थे, उसे देखकर यह एहसास हो रहा था कि बहुत-से बच्चे अपना नाम लिखना सीख गए हैं। बच्चों के हाव-भाव देखकर भी ऐसा महसूस हो रहा था कि उन्हें एक बहुत बड़ी चीज़ हासिल करने का एहसास हो रहा था। आधारशिला में आए कई बच्चे दो-तीन-चार साल सरकारी स्कूल में जाने के बाद आए थे। उनके माँ-बाप का भी, शिक्षा को लेकर एक प्रमुख डायलॉग था - सालों से स्कूल जा रहा है, नाम तक लिखना नहीं सीखा। पहले ही दिन अपना नाम लिख पाना, सचमुच एक उपलब्धि थी।

दूसरे दिन हमने बच्चों से कहा, "आज अपने नाम के साथ कुछ नई गतिविधि करेंगे।" हमने एक बच्चे के नाम 'मजली' के अक्षरों को बोर्ड पर दूर-दूर लिख दिया -

म ज ली

अब हमने बोर्ड पर लिखे अक्षरों पर अँगुली रखते हुए सभी बच्चों से बुलवाया - म ज ली।

"कितने अक्षर हैं मजली के नाम में?

"तीन।"

"तो देखो, तुम्हारे नाम में कितने अक्षर हैं?"

हमें तुरन्त ही कुछ बच्चों की ओर

से जवाब मिलने लगे, "मेरे नाम में तो दो ही हैं - री दू।" "मेरे नाम में तीन हैं - रा दे श।" "मेरे में दो ही हैं - चम पा।"

इसके बाद हमने बच्चों को एक-एक कर ब्लैक बोर्ड पर बुलाया और अपना नाम लिखने को कहा। अधिकतर बच्चे अभी अपना नाम बोर्ड पर लिखने के लिए तैयार नहीं थे। शायद इतना साहस नहीं जुटा पा रहे थे। कुछ बच्चों ने बोर्ड पर नाम लिख भी दिया। जो बच्चे साहस नहीं जुटा पा रहे थे, उनके नाम हमने ही बोर्ड पर लिख दिए।

"कितने अक्षर हैं?"

"तीन।"

"बोलो, अलग-अलग करके।"

क म ल

"चलो, सब इसके नाम के आकड़े (अक्षर) अलग-अलग बोलते हैं।"

फिर उस बच्चे से बाला, "अब तुम बोलो और तुम्हारे पीछे सब बोलेंगे।"

उस बच्चे ने एक-एक आकड़े पर अँगुली रखकर बोला, "कमल" और सबने उसके पीछे दोहराया।

इसे हमने 8-10 बच्चों से करवाया। लेकिन जो बच्चे खुद मर्ज़ी से उठकर आए, सिर्फ उनसे ही करवाया। इसके बाद हमने सभी बच्चों की स्लेट पर उनके नाम के आकड़े अलग-अलग लिखकर दिए और उन्हें उसे बार-बार लिखने के लिए कहा। लिखते समय उन्हें अलग-अलग आकड़े बोलने को भी कहा। कुछ समय बाद अधिकतर

बच्चों ने लिख लिया। शुरू-शुरू में बच्चों ने बड़े-बड़े अक्षर में लिखा इसलिए उनकी स्लेट जल्दी भर जाती थी। स्लेट भरते ही वे बार-बार दिखाने के लिए आ जाते। जब दिखाने आते तो उनसे स्लेट पर लिखे हुए को बोलने के लिए भी कहा जाता था। इस समय नज़ारा देखने लायक होता था – बच्चे भीड़ लगाकर अपनी-अपनी पट्टी आगे करते, और एक-दूसरे को धक्का मारकर आगे आने की कोशिश करते। आज भी कुछ बच्चों ने नहीं लिखा था। वही, कल की तरह शोरगुल, एक-दूसरे को छेड़ना।

हमें समझ आ गया था कि आज का काम हो गया है। बच्चों की हरकतें ही बता देती हैं कि अब हो गया। हमने माहौल को थोड़ा बदलने की नियत से पूछ लिया, "चलो, अब कुछ खेलना है क्या?"

सभी को खेलना था। ज़ोर-से, सामूहिक 'हाँ' की आवाज़ हुई।

इस पर हमने बोला, "तो पहले जो लिखा है, उसे दिखा दो और अपने नाम के आकड़े भी बोलकर बता दो।" फिर से समूह को पंक्तिबद्ध किया। एक-एक बच्चे ने अपने नाम के आकड़े अलग-अलग बोले और जो लिखा था, वो भी दिखाया। लगभग सभी ने ठीक ही बोला था। जिनके नामों में आधे अक्षर थे, उनको दिक्कत हुई जैसे

'चम्पा' को 'च म पा' बोला और लिखा। हम भी यही चाहते थे कि अभी वे इसे 'च म पा' कहें। इस बात को आने वाले दिनों में समझाना पड़ेगा।

जिनके नाम लम्बे थे जैसे सुकलाल, सायमल, वे बाद के दो अक्षर जोड़ देते थे - सु क लाल।

बच्चे खेलने जाने के लिए थोड़े उतावले भी थे। लेकिन तभी खाने की घण्टी बज गई। मतलब, अब खेल छूट गया।

तीस बच्चों के नामों में बहुत-से अक्षर थे। कुछ बिना मात्रा के तो कुछ मात्रा वाले। कुछ आधे अक्षर भी थे। अभी तक बच्चे कई सारी ध्वनियों और अक्षरों से परिचित हो चुके थे।

तीसरा दिन

जैसे ही कक्षा की शुरुआत हुई, हमने बच्चों से पूछा, "कौन-कौन अपना नाम लिखना सीख गया?" काफी सारे बच्चों ने ज़ोर-से आवाज़ करके और हाथ उठाकर अपनी सफलता दर्ज की। बच्चों के जोश से हमारा भी उत्साह बढ़ गया।

हमने बच्चों से कहा कि "आज एक नया काम करते हैं। सबसे पहले पट्टी पर अपने नाम का पहला

आकड़ा बड़ा-बड़ा लिख लो और फिर ढूँढो कि और किस-किस दोस्त के नाम में वह अक्षर आता है।" बच्चों ने अपनी-अपनी पट्टी पर लिखा, फिर थोड़ा हिचकिचाते हुए सब अपनी पट्टियाँ लेकर एक-दूसरे की स्लेट-पट्टी देखने लगे। अपने लिखे आकड़े को दूसरों की पट्टी में लिखी हुई आकृति से मिलाते रहे। कुछ बच्चों को खुद के लिखे आकड़े का एक जोड़ीदार मिला तो किसी ने एक पर न रुकते हुए, बाकी बच्चों की पट्टी देखना भी जारी रखा। ऐसे में कुछ बच्चों को दो जोड़ीदार भी मिले। जिन बच्चों के नाम का पहला अक्षर मात्रा के साथ था, उन्हें परेशानी हो रही थी। जैसे सायमल को डण्डे वाला 'स' नहीं मिल रहा था। 'स' में कुछ और लगा हुआ मिल रहा था।

सुकलाल तो बहुत ही खुश था, उसका तो पूरा नाम ही मिल गया। एक और सुकलाल था इस समूह में।

कुल मिलाकर सभी बच्चे काफी खुश थे। सभी को कोई-न-कोई अक्षर मिल ही गया था। फिर बच्चों से कहा गया कि "अब ऐसा करते हैं कि जिसके नाम में तुम्हारे नाम वाला अक्षर है, उसका नाम भी लिखना सीख लेते हैं।" सभी बच्चे जोड़ियाँ बनाकर एक-दूसरे का नाम लिखने लगे।

खुद की स्लेट पर दोस्तों के नाम लिखने के बाद कुछ बच्चों ने दूसरे बच्चे की स्लेट पर भी अपना नाम लिखकर दिया, और किसी ने जोड़ीदार के नाम को देख-देख कर लिख लिया। यहाँ तक पहुँचते हुए हमें महसूस होने लगा कि आज के लिए पर्याप्त काम हो गया है। फिर बच्चों से कुछ करके लाने की नियत से कहा गया कि "कल अपने दोस्तों के नाम लिखकर लाना है और उनके आकड़ों को अलग-अलग बोलना भी है।"

चौथा दिन

पहले तीन दिनों में हमने जो किया, उसे याद करें तो अपना नाम लिखना, नाम के अक्षरों को पहचानना, नाम के अक्षर और कहाँ हैं – इसे पहचानना, अपने दोस्त का नाम लिखना शामिल था। अब तक हम यह भी समझ गए थे कि अलग-अलग आवाज़ों के लिए अलग-अलग आकड़े (अक्षर/वर्ण) होते हैं। जितनी तरह की भी ध्वनियाँ हम मुँह से निकाल सकते हैं, उनको हम लिख सकते हैं।

इस बात को आगे बढ़ाते हुए

हमने कहा, "अब अपना और दोस्त का नाम लिखना तो सीख गए हो। अब और क्या लिखना चाहते हो?"

"मेरे छोटे भाई का नाम, पेड़ का नाम, जानवरों का नाम..." तरह-तरह की फर्माइश सुनाई देने लगी।

फिलहाल ध्वनियों पर काम जारी रखने की गरज से हमने बच्चों से कहा, "चलो, बारी-बारी से सब अपने नाम के पहले अक्षर को ज़ोर-से बोलेंगे और फिर हम सब उसके साथ बोलेंगे।" उदाहरण के लिए, मदन का पहला अक्षर 'म', सुकलाल का 'सु', चम्पा का 'च' आदि।

म..., सु..., च..., क..., सा..., दी..., री...

सब बच्चे ज़ोर-से चिल्लाकर इन पहले अक्षरों को दोहरा रहे थे।

कुछ मिनट यह गतिविधि करवाने के बाद बच्चों से कहा गया कि "अब किसी भी चीज़ का नाम बोल सकते हो। कुछ भी – इस कमरे की या कमरे के बाहर की।"

किसी ने कहा, "नाहर।"

"चलो, अब नाहर को अलग-अलग तोड़कर बोलते हैं। कौन बोलेगा?" यदि कोई बच्चा खुद से उठकर आ जाता तो ठीक अन्यथा दूसरा तरीका ढूँढ निकाला था - किसी बच्चे को खुद ही बुलवा लेना। लेकिन किसी भी बच्चे को नाम लेकर नहीं उठाना। यदि हम देखते कि कोई बच्चा धीरे-से अपने आप बोल रहा है तो उसे थोड़ी हिम्मत देकर, सबके सामने ज़ोर-से बोलने को कहते थे।

"तो 'नाहर' को तोड़कर क्या बना - ना ह र। 'नाहर' वाले आकड़े किसी के नाम में हैं क्या?"

बच्चे बोले, "रमेश में 'र' है। हरिराम में 'ह' है।"

"चलो, और किसी चीज़ का नाम बताओ।"

"सागड़ा।"

"ठीक है, इसे बोलते हैं - सा ग ड़ा। 'सा' और किसी चीज़ या किसी बच्चे के नाम में आता है क्या?"

बच्चों ने जवाब दिए, "सालाई, साव, सुकलाल।"

"हाँ, 'सुकलाल' में है लेकिन थोड़ा अलग है न? 'सा' गड़ा और 'सु' कलाल।"

" 'ग' और किस-किस चीज़ के नाम में आता है, सोचकर बताओ।"

बच्चों ने बताया, "गरी, गहूँ गरबा..."

"चलो, अब अपने नाम के पहले अक्षर से कोई और चीज़ का नाम बताओ।"

ऐसी गतिविधियों में कई बार बच्चों के जवाब गलत भी हो सकते हैं। लेकिन सब बच्चे कुछ-न-कुछ बताने

की कोशिश करते हैं। हमारा मानना था कि यदि कोई गलती करता है तब भी उसे टोकना नहीं है। "तुम गलत हो," ऐसी किसी भी टिप्पणी से बचना है। गलत जवाब भी हमें बच्चों के दिमाग में झाँकने का मौका देते हैं।

कई बार बच्चे अपने नाम के पहले अक्षर से शुरू होने वाली चीज़ का नाम नहीं बताते लेकिन जो भी नाम वो लेते हैं, उसमें वह अक्षर ज़रूर आता है। उदाहरण के लिए, एक बच्ची 'मजली' ने अपने नाम के पहले अक्षर से शुरू होने वाली चीज़ का नाम बताया 'नमक'। नमक 'म' से शुरू नहीं होता लेकिन 'नमक' में शब्द के बीच का अक्षर 'म' है।

इस गलती के माध्यम से हम कह सकते हैं कि "हाँ, मजली का पहला अक्षर क्या है? - 'म'।"

"न म क में 'म' तो आता है लेकिन नमक में पहले अक्षर की ध्वनि क्या है - न म क।"

"पहली ध्वनि तो 'न' है।"

"चलो, 'म' से शुरू होने वाली किसी और चीज़ का नाम सोचो।"

धीरे-धीरे बच्चों को समझ आ जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से हम एक लिखे हुए टेढ़े-मेढ़े अक्षर का किसी आवाज़ से सम्बन्ध बना रहे हैं। एक अक्षर के लिए एक आवाज़ और हर तरह की आवाज़ के लिए कोई-न-कोई अक्षर।

पाँचवाँ दिन

एक बार पुराने सभी अभ्यासों को दोहराया गया। पुराने काम को बार-बार करना बहुत ज़रूरी है। बार-बार करने से ही हम किसी काम में अभ्यस्त होते हैं। जैसे-जैसे लिखने में दक्षता बढ़ती जाती है, बच्चे हस्तलेख को सुन्दर बनाने की तरफ भी बढ़ सकते हैं। लेकिन हमने अभी तक इस बात पर ध्यान नहीं दिया था। हम सोचते थे कि निरर्थक लगने वाले कामों को बच्चे पहले न करें। उनके मन में एक उत्साह था, अपना नाम लिखने का। इस काम को सफल बनाना बहुत ज़रूरी था। अपने नाम के साथ-साथ कुछ बच्चों ने अपने एक-दो दोस्तों के नाम लिखना भी सीख लिया था।

'दिया' नाम की एक बच्ची ने शर्माते हुए अपने छोटे भाई का नाम लिखकर दिखाया।

"अच्छा, तो तुम अपने छोटे भाई का नाम लिखना चाहती हो। चलो, लिखकर दे देते हैं।" इस तरह हमें कई बच्चों के छोटे-बड़े भाई-बहनों के बारे में कुछ जानकारी भी मिल गई। आज हम एक बड़ी छलाँग मारने का प्रयोग करना चाहते थे।

....एक ताली, दो ताली, एक ताली, दो ताली, तीन ताली... बच्चों का ध्यान आकर्षित हो गया।

"तो आज किस चीज़ के नाम लिखेंगे?" हमें मिले कई सारे सुझावों

में से हमने पेड़ों के नाम का चुनाव किया।

"चलो, पेड़ों के नाम लिखते हैं।"

'हाँ' तो सब ने जोश में बोल दिया लेकिन फिर किसी ने कहा कि "कैसे लिखेंगे?"

"अरे, तुम सब तो लिखना सीख गए हो। चलो, एक-दो नाम बोर्ड पर लिखते हैं। समझो कि अपन 'सागड़ा' लिखना चाहते हैं। तो पहले 'सागड़ा' को अलग-अलग तोड़कर बोलते हैं। कौन बोलेगा?"

बोर्ड पर बड़े-बड़े अक्षर दूर-दूर लिख दिए।

सा ग ड़ा

"चलो, अब देखते हैं कि 'सा' किसके नाम में है। 'सावन' का 'सा' मिल गया। 'सा' तो लिख लिया। अब बच गया - गड़ा। चलो, अब 'ग' किसके नाम में है, ढूँढते हैं। 'गणपत' में 'ग' मिल गया। 'साग' तो लिख लिया, अब 'ड़ा' किसी के नाम में है क्या?"

हमें किसी के नाम में 'ड़ा' नहीं मिल रहा था। तो मैंने बच्चों से कहा, "मैं बोर्ड पर लिख देता हूँ 'ड़ा'। तो यह बन गया - सा ग ड़ा - सागड़ा।"

"समझ आया न खेल? अब जिस भी पेड़ का नाम लिखना चाहते हो, उसके अक्षर क्लास के बच्चों के नामों में ढूँढो और उनसे जाकर सीख लो।"

धीरे-धीरे बच्चे एक-दूसरे के पास जाकर देखने लगे। पूछने भी लगे कि कौन-सा अक्षर आएगा। उन्होंने जो लिखा था, वो हमारे पास आकर दिखाने लगे। कुछ को अपने पेड़ के नाम के लिए अक्षर मिल गए थे। किसी-किसी को नहीं मिल रहे थे। ऐसी स्थिति में हमने उनकी कॉपी में पेड़ के नाम लिख दिए। बच्चे लिखना सीख रहे थे इसलिए ज़्यादातर बच्चों की लिखावट टेढ़ी-मेढ़ी थी। दो-चार बच्चों को छोड़कर।

कुछ देर में तो सभी ने पाँच-छः पेड़ों के नाम लिख लिए थे। "वाह!! हम लिखना सीख गए। देखा, कितना आसान है लिखना। अब इस तरह से तुम किसी भी चीज़ का, जानवर का या अपने घर वालों का नाम लिख सकते हो। लिख सकते हो या नहीं?"

इस तरह से आज का काम पूरा हो गया था। हमने बच्चों से कहा, "कल सब दस-दस पेड़ों के नाम लिखकर लाना। याद है न, कैसे लिखना है? पहले जो भी नाम लिखना है, उसको तोड़कर बोलना है। फिर अलग-अलग आकड़ों को दूसरे बच्चों के नामों में ढूँढकर लिखते जाना है। बस, हो गया काम। चलो, अब कुछ खेलने जाते हैं।"

सार्थक अनुभवों के साथ भाषा सीखना

हो सकता है, बच्चों के नाम में किसी और मात्रा के साथ 'स' हो, जैसे सुरेश में 'सु' या सलोनी में 'स'। यदि वही आवाज़ यानी अक्षर मात्रा के साथ मिल गया तो अच्छा है, लेकिन यदि नहीं मिला तो आप बोर्ड पर लिख दो। अधिक-से-अधिक गड़बड़ यही होगी कि बच्चे गलत मात्रा के साथ लिखेंगे। लिखना सीखने की शुरुआत में यदि बच्चे अभी अक्षर भी सही ढूँढ पा रहे हैं तो भी बड़ी बात होगी। कम-से-कम स्वर अक्षरों (वर्ण) की ध्वनि के साथ उस अक्षर के चित्र का सम्बन्ध बच्चे के दिमाग में तो बन रहा है, यही हम चाहते हैं। पहली बात यही समझाना है कि हर आवाज़ के लिए एक चित्र है।

लिखने-पढ़ने के इस तरीके में सबसे बड़ा फायदा यह है कि बच्चा पहले दिन से ही किसी सार्थक काम में लगा रहता है। यह सार्थकता बच्चे में रुचि और उत्साह बढ़ाती है। वरना साल-दर-साल टीचर बच्चों को 'अ' अनार का, 'आ' आम का बुलवाते रहते हैं लेकिन बच्चों को यह नहीं पता चलता कि इससे क्या होगा। अब उनके सामने कुछ लिखने का लक्ष्य है। उस नाम को लिखने के लिए वे अक्षर सीख रहे हैं। खुद से ढूँढ भी रहे हैं।

सार्थक शब्दों के मार्फत अक्षरों की पहचान, अक्षरों का ध्वनियों से सम्बन्ध और धीरे-धीरे लिखने-पढ़ने की ओर लेकर जाना। यह सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण है कि बच्चों से निरर्थक काम न करवाए जाएँ। उनके सामने कुछ वास्तविक लक्ष्य रखे जाएँ। इससे सम्बन्धित गतिविधियाँ, तरीके, सामग्री विविध हो सकती हैं। हमने पाँच दिन कहा। किसी अन्य शाला में ज़्यादा या कम समय भी लग सकता है। इसलिए सिद्धान्त महत्वपूर्ण है, तरीके आपके अपने हो सकते हैं।

यहाँ, हमारी कक्षा में भी कुछ अनोखा घट रहा था। एक सप्ताह के बाद सभी बच्चों ने अपने-अपने नाम, अलग-अलग रंगों के स्केच पेन से, एक चार्ट पेपर पर लिखे जिसे हमने क्लास में टांग दिया। सब अपना-अपना नाम पहचान लेते थे। कुछ बच्चे अपने दोस्तों के नाम भी पहचान रहे थे। सुवालाल क्लास में सबसे छोटा था। लेकिन वह किसी से पीछे क्यों रहता? उसने मैगी नूडल्स

की तरह का कुछ लिखा था। सब हैरान थे कि यह क्या है। सुवालाल बहुत खुश था कि उसने भी अपने ही हिसाब से अपना नाम चार्ट पर दर्ज़ करवा दिया।

साथ ही, बच्चों ने अपनी इच्छा से दोस्तों के नाम, उनके आसपास के पेड़ों के नाम, जानवरों आदि के नाम भी लिख लिए। वे सीख रहे थे कि किसी भी चीज़ को लिखना बहुत आसान है। केवल नाम में निहित ध्वनियों को पहचानना है और उस आवाज़ से सम्बन्धित अक्षरों को याद रखना है। एक-दूसरे के नामों से अक्षर ढूँढने की गतिविधि भी उन्हें अच्छी लगी।

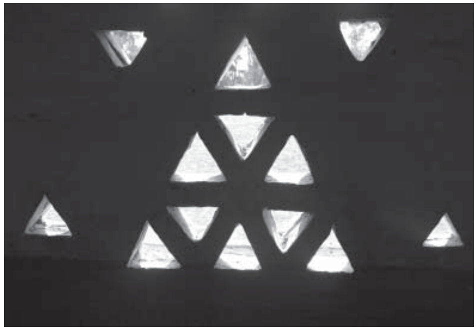

फ़ोटो - अमित

कुछ दिनों बाद जब हमारे लर्निंग सेंटर में बच्चों के माता-पिता मिलने आए तो हमने बच्चों से अपनी-अपनी कॉपियाँ अपने माँ-पिताजी को दिखाने के लिए कहा। बच्चों के पालक भी हैरान रह गए। कई बच्चे तीन-चार साल तक स्कूल जाने के बाद भी अपना नाम नहीं लिख पा रहे थे। इसके उल्ट, यहाँ एक महीने में वे अपना नाम लिखना और नाम के अक्षरों को पहचानना सीख गए थे। इसकी वजह से पालकों के मन में हमारे स्कूल के बारे में, हमारे पढ़ाने के तरीके के बारे में भरोसा बढ़ गया और गाँवों में स्कूल का अच्छा प्रचार भी हो गया। बच्चों को अनार, आम की जगह 'म' मजली का, 'च' चम्पा का, 'क' कमल का याद हो गया था। और कमल कोई अनदेखा फूल नहीं था, एक बच्चा था जिसे वे रात-दिन देखते थे और छू भी सकते थे।

अमित और जयश्री: लगभग तीन दशकों से पश्चिम मध्य प्रदेश में भील, भीलाला, बारेला आदिवासियों के बीच में रह रहे हैं। साथ ही, खेड़ूत मज़दूर चेतना संगठ, नर्मदा बचाओ आन्दोलन व पश्चिम भारत प्रवासी मज़दूर संघ के साथ-साथ आदिवासियों के अन्य संघर्षों के साथ भी खड़े हैं। 1998 से आदिवासी बच्चों व युवाओं की शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं।

सभी चित्र: सौम्या मैनन: चित्रकार एवं एनिमेशन फिल्मकार। विभिन्न प्रकाशकों के साथ बच्चों की किताबों एवं पत्रिकाओं के लिए चित्र बनाए हैं। बच्चों के साथ काम करना पसन्द करती हैं।